बनास जन

कविता समय

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

कविता समय

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 125 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–150 रुपये
250 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–275 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात		5
मोर्चे पर विदागीत : तपे हुए भावबोध की परिपक्व कविताएँ	कालूराम परिहार	7
इधर के गाँव-कस्बे में अभी इतनी मनुष्यता बची हुई है....	लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता	14
बौखलायी हुई नारी का संक्षिप्त एकालाप : यूँ तो सब कुछ पूर्ववत है	रश्मि कृष्णन	18
जीवनानुभवों से साक्षात्कार कराती 'फटी हथेलियाँ'	भावना मासीवाल	22
बहुआयामी प्रतिरोध के नए दरवाजे	प्रांजल धर	26
अप्रत्याशित की सुंदरता	आशुतोष प्रसिद्ध	29
दलित साहित्य से बहुजन साहित्य की ओर यात्रा करती कविताएँ	प्रमोद रंजन	34
प्रेम में पेड़ होना संभव है	गजेन्द्र कुमार मीणा	42
हमारे समय की जरूरी कविता : 'नीली बयाज'	शरद कुमार झारिया	46
युग का स्वर और विद्रोह की अनुगूँज	रजनी प्रताप	50
नई संभावनाओं की कविताएँ	रेखा सेठी	55
स्त्री चेतना की लयबद्ध पुकार : भाषा में नहीं	विनीत काण्डपाल	61
अस्तित्वपरक अनुपस्थिति में स्त्री मन की सम्पूर्णता को खोजती कविताएँ	विमलेश शर्मा	66
प्रतिबद्ध चेतना की ठहरी हुई आवाज	शंकर कुमार	70
पारम्परिक जीवन मूल्य और समसामयिक यथार्थ की काव्यात्मक प्रस्तुति	संगीता कुमारी	76
धर्म के पाँव में गड़ा हुआ काँटा	राजेन्द्र कैड़ा	81
प्रत्यक्ष अनुभवों का संवादधर्मी वितान	शिवदत्ता वावळकर	85
हम गुनाहगार और बेशर्म औरतें	कामिनी	89
स्त्री के सर्वोत्तम रूप की अभिव्यंजना	नियति कल्प	94
कविता का आत्म-संस्कार : आत्मद्रोह	राजकुमार	98
युग की बयार में जीवन के रंग	रीता सिन्हा	102
सत्ता में बने रहने के लिए क्रूरता एक सात्विक अस्त्र है!	वीरेंद्र प्रताप	107
कविता के बहाने प्रकृति और मनुष्य की नैसर्गिकता की तलाश	कृष्ण कुमार पासवान	115
उम्मीदों का सहज कवि	सत्येन्द्र प्रताप सिंह	120
सधे शिल्प में अंचल का मर्सिया, नदियों के हवाले	उज्ज्वल शुक्ल	125
मैं स्त्री हूँ या कि सृष्टि	राजाराम भादू	129

स्त्री और दुःख तो सहोदर हैं	विजया सती	136
नवयुग की तिमिर कथा	निशा नाग	141
हेमंत शेष का आत्म-संघर्ष और उनकी नई कविता में प्रश्नाकुल द्वंद्व की द्युति	त्रिभुवन	146
अनुवादक के साए में बैठा कवि	नीलम सिंह	153
बहती हुई नदी पर आग का घर	अनीता गौड़	156
जीवन के विविध रागों को संवलित करती कविताएँ	धर्मेन्द्र प्रताप सिंह	160
असंसार में संसार की कविताएँ	ओम प्रकाश	165
शांति का सुंदर विन्यास	ब्रजरतन जोशी	169
बेबाक जनकवि ओमप्रकाश वाल्मीकि	नामदेव	172
पहाड़ी प्रदेश से महानगर तक फैली यातना का विस्तार	संजय कुमार	177
नवगीत का प्रतिनिधि संकलन : 'समकालीन नवगीत संचयन'	राजेन्द्र गौतम	180

अपनी बात

''कवि-वाणी के प्रसाद से हम संसार के सुख-दुख, आनन्द क्लेश आदि का शुद्ध स्वार्थमुक्त रूप में अनुभव करते हैं। इस प्रकार के अनुभव के अभ्यास से हृदय का बन्धन खुलता है और मनुष्यता की उच्च भूमि की प्राप्ति होती है। किसी अर्थ पिशाच कृपण को देखिए, जिसने केवल अर्थलोभ के वशीभूत होकर क्रोध, दया, श्रद्धा, भक्ति, आत्माभिमान, आदि भावों को एकदम दबा दिया है और संसार के मार्मिक पक्ष से मुँह मोड़ लिया है। न सृष्टि के किसी रूपमाधुर्य को देख वह पैसों का हिसाब-किताब भूल कभी मुग्ध होता है, न किसी दीन-दुखिया को देख कभी करुणा से द्रवीभूत होता है; न कोई अपमानसूचक बात सुनकर क्रुद्ध या क्षुब्ध होता है। यदि उससे किसी लोमहर्षण अत्याचार की बात कही जाय तो वह मनुष्य धर्मानुसार क्रोध या घृणा प्रकट करने के स्थान पर रुखाई के साथ कहेगा कि 'जाने दो, हमसे क्या मतलबय चलो, अपना काम देखें।' यह महा भयानक मानसिक रोग है। इससे मनुष्य आधा मर जाता है। इसी प्रकार किसी महाक्रूर पुलिस कर्मचारी को जाकर देखिए; जिसका हृदय पत्थर के समान जड़ और कठोर हो गया है, जिसे दूसरे के दुःख और क्लेश की भावना स्वप्न में भी नहीं होती। ऐसो को सामने पाकर स्वभावतः यह मन में आता है कि क्या इनकी भी कोई दवा है। इनकी दवा कविता है।''

--आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

क्या सचमुच ऐसा हुआ है कि जैसे जैसे मनुष्य सभ्यता आगे बढ़ रही है कवि कर्म कठिन होता जा रहा है? इस सवाल का उत्तर यह हो सकता है कि कम से कम हिन्दी में तो ऐसा नहीं हो रहा। कविता संग्रहों के प्रकाशन की संख्या निश्चय ही उत्साहवर्धक है। दूसरा उत्तर यह कि बड़ी संख्या में प्रकाशित हो रहे कविता संग्रहों में वाकई कविताएँ कितनी हैं। कुल मिलाकर बात गुणवत्ता की होगी और होनी ही चाहिए। इसका यह आशय बिलकुल नहीं कि खराब कविता लिखना अपराध हो गया है। नहीं, खराब कविता भी हर युग में लिखी जाएगी। यह सिर्फ आलोचना के लिए चुनौती है कि वह अपने समय और युग की सबसे सही कविता की पहचान करे। यह काम बार-बार करना पड़ेगा और इसकी अप्रियता को भी स्वीकार करना होगा। बार-बार शुक्ल जी के इस कथन को भी याद रखना होगा कि कविता हृदय के बंधन खोलती है और पाठक को मनुष्यता की उच्च भूमि पर ले जाती है। हमारे समय में धन का जैसा प्रदर्शनकारी और आतंककारी स्वरूप निर्मित हुआ है वह हमारे सभी मानवीय सद्गुणों के लिए खतरा बनकर आया है। क्या कविता इस खतरे से लड़ने और बेहतर मनुष्य बनाने में हमारी मदद करेगी?

कवियों में भी आलोचना का विवेक होता है। हमारे यहाँ मुक्तिबोध इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। उनसे पहले छायावाद के लगभग सभी कवि गहरा आलोचना विवेक रखते थे और बाद में भी अनेक ऐसे कवियों को पहचाना जा सकता है। नये दौर में भी ऐसे कवियों की पहचान संभव है जो